आदर्श जीवन ?

लेखक–

अल्लामा सै0 सुलेमान नदवी रह0

अनुवाद–

डॉ० रफ़ीक़ अहमद

بسم الله الرحمن الرحيم

(इतिहास का स्पष्ट निर्णय)

समस्त मानव जाति के लिये वही व्यक्ति आदर्श एवं उदाहरण बनाया जा सकता है जिसमें दो विशेषतायें मौजूद हों। एक यह कि मानव-जीवन की सारी आवश्यकतायें उसके जीवन में एकत्रित हों, वह व्यापारी हो, मज़दूर हो, फ़क़ीर हो, बादशाह हो, पति हो, सिपाही हो, सेनापति हो, कारीगर हो, शिक्षक हो ताकि संसार का प्रत्येक व्यक्ति उसके पदचिन्हों पर चल सके और उसे अपना मार्गदर्शक बना सके। दूसरे यह कि उसका जीवन समस्त क्षेत्रों में सफल भी हों ताकि कोई व्यक्ति जो उसके पदचिन्हों पर चले असफल एवं अपूर्ण न रहे। एक व्यक्ति का एक ही समय में पिता, पति, बादशाह, व्यापारी, मज़दूर, सेनापति, शिक्षक होना वास्तव में एक विशेषता है परन्तु इस से भी बड़ी विशेषता यह है कि उसके जीवन के उन सभी रंगों में से प्रत्येक रंग अपने स्थान पर पूर्ण और बेमिसाल हों।

आइये! अब इसी मापदंड और पैमाने को सामने रख कर संसार के प्रसिद्ध धार्मिक गुरुओं के व्यक्तिगत जीवन पर ग़ौर करें और देखें कि उनमें वह कौन ऐसा व्यक्तित्व हैं जिसके जीवन में मानव-आवश्यकताओं के सारे पहलू एकत्रित हैं और प्रत्येक पहलू पूर्ण हैं?

क्या महावीर स्वामी का व्यक्तिगत जीवन गृहस्थ जीवन व्यतीत करने वाले इन्सानों के लिये आदर्श हो सकता है? क्या महात्मा बुद्ध के व्यक्तित्व से सिपाही और सेनापति मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं ? क्या हज़रत ईसा मसीह के व्यक्तिगत जीवन से राजनैतिक तथा व्यवसायिक लोगों को कोई मार्गदर्शन मिल सकता है ?

इन प्रश्नों का उत्तर बिल्कुल स्पष्ट है, महावीर स्वामी मात्र एक त्यागी थे, महात्मा बुद्ध एक साधु थे, हज़रत ईसा मसीह व्यक्तिगत

रूप से मात्र एक नैतिक उपदेशक से अधिक कुछ न थे, इन सन्तों और महात्माओं का व्यक्तिगत एवं व्यवहारिक जीवन विशेष समूहों एवं समुदायों के लिये तो आदर्श हो सकता है परन्तु वह समस्त मानवजाति के लिये जीवन आदर्श नहीं हो सकता ।

स्थायी–नमूना

इन्सान की मुक्ति और सफलता दो बातों में है एक यह कि जीवन व्यतीत करने के लिये बेहतरीन सिद्धान्त तैयार किये जायें। दूसरे यह कि यह सिद्धान्त मानव जीवन में व्यवहारिक रूप से प्रचलित हो जायें, यदि सिद्धान्त सही हों और जीवन-कार्य भी सही हो तो समझिये कि मानव जाति की सारी समस्याओं का समाधान हो गया और सारी मनोकामनाओं की पूर्ति भी।

सही सिद्धान्तों की तैयारी का कार्य बहुत पहले समाप्त हो चुका है, संसार के सभी ईशदूत, ऋषि और मुनि इसीलिए आये थे, समस्त बड़े-बड़े धर्मों की आधार शिलायें इन्हीं सिद्धान्तों पर रखी गयी थीं और अब छापे खाने की शक्ति ने उन समस्त ज्ञानात्मक एवं सैद्धान्तिक वास्तविकताओं को बिल्कुल उजागर करके मानव जाति के समक्ष रख दिया है।

आयत– ''अब सच्चाई स्पष्ट है और सबके सामने है''

इस समय मानव-जीवन का हल होने योग्य प्रश्न यह है कि जीवन की इन स्वीकृत सच्चाईयों को व्यवहारिक जीवन में क्यों कर लागू किया जाये ? इसलिए कि इन्सान की विकट समस्या यह है कि वह सच्चाई को जानता है परन्तु उस पर अमल नहीं करता, उसके समक्ष स्वार्थ है, मतलबपरस्ती है, मसलहेत और कुछ ज़िद एवं पक्षपात है, लापरवाही एवं घमण्ड है, द्वेष एवं ईर्ष्या है ये समस्त अंधेरे उसके व्यवहारिक जीवन पर इस तरह छाये रहते हैं कि सच्चाई उसको हर पल

पुकारती है परन्तु वह तनिक भी ध्यान नहीं देता।

आप पूछेंगे कि इस समस्या का समाधान क्या है? वास्तविक कर्म मात्र कार्य एवं आदर्श तथा प्रभाव एवं प्रेम की शक्ति ही से संसार में लागू हो सकता है, आज संसार को एक आदर्श एवं उदाहरण की आवश्यकता है ऐसा आदर्श और उदाहरण जो अपने कर्म की श्रेष्ठता और प्रभाव की महानता से दुनिया का महबूब बन जाये, इन्सान के दिल पर छा जाये और मानव जाति की आत्मा को इस प्रकार वशीभूत कर ले कि यदि वह पूरब की ओर इशारा करे तो सब लोग पूरब की ओर झुक पड़ें, यदि वह पश्चिम की ओर देखे तो सभी लोग पश्चिम की ओर देखने लगें।

देखिये, एक छोटी मिसाल है, अगर बाइबिल होती और ईसा मसीह न होते, अगर क़ुरआन होता और मुहम्मद सल्ल० न होते तो दुनिया में कभी भी इन्क़ेलाब नहीं आ सकता था, मसीही और इस्लामी इन्क़ेलाब मात्र पुस्तकीय सिद्धान्तों ने पैदा नहीं किये, ये उन महान व्यक्तित्वों ने पैदा किये हैं जिनका बाइबिल और क़ुरआन पर अमल था। ईश्वरीय ग्रन्थों के साथ जो संदेष्टा एवं पैगम्बर भेजे गये उनके भेजने का उद्देश्य एवं सिद्धान्त यही है। इन्सानों की इस्लाह एवं सुधार तथा मार्गदर्शन का तरीक़ा यह है कि ईश्वर के संदेश वाहक इन्सान के समक्ष अपनी शिक्षाओं एवं संदेश पर वह स्वयं अमल करते हैं। इससे उनका जीवन इतना अधिक सौंदर्यपूर्ण तथा प्रिय हो जाता है कि लोगों के दिल उनकी सहानुभूति एवं सहृदयता, आभार एवं अनुग्रह पर मुग्ध हो जाते हैं। उनका अमल लोगों को मोहित करता है, इसके बाद वह मात्र एक इशारा करते हैं और हज़ारों लोग उनके प्रेम और मोहब्बत के असर से उनके पदचिन्हों पर चल पड़ते हैं परन्तु यदि किसी समय यह असर बाक़ी न रहे, मिसाल के तौर पर क़ौम को अपने मार्गदर्शक के

प्रभावपूर्ण स्थित याद न रहें तो फिर प्रेम-सम्बन्ध टूट जाता है और फिर इसके बाद पुस्तकीय सिद्धान्तों और काल्पनिक विचार धाराओं पर कोई अमल नहीं करता ।

आईये, संसार के प्रसिद्ध धर्म प्रवर्तकों एवं संस्थापकों से सम्बन्धित इतिहास से पता लगायें कि वह कौन सा व्यक्तित्व है जिसके जीवन के सारे कारनामें जीवित हों जिसका प्रभाव जीवित हो जिसकी हरेक अदा, हरेक शब्द एवं कथन, प्रत्येक मामलों के साथ-साथ उसके बीवी-बच्चे तथा दोस्त एवं दुश्मन भी सब के सब जीवित हों। इस संसार में कोई भी ऐसी जाति और क़ौम नहीं गुज़री जिसमें कोई संदेष्टा न भेजा गया हो। एक इस्लामी वर्णन के अनुसार विभिन्न जातियों और देशों में ईश्वर की ओर से एक लाख चौबीस हज़ार ईशदूत भेजे गये लेकिन व्यवहारिक जीवन की स्थिति यह है कि इस समय दुनिया के सामने एक भी ऐसा धार्मिक ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है जो किसी धर्म-प्रवर्तक या संस्थापक के जीवनकाल में लिपिबद्ध किया हो और जिसके सम्बंध से यह दावा किया जा सके कि वह किन-किन सुरक्षित हाथों से होता हुआ अब अपनी मूलरूप में दुनिया के सामने मौजूद है, यहां यह प्रश्न उठता है क्या ईश्वर ने अपने सन्देष्टाओं के जीवनीयों एवं शिक्षाओं की क्यों सुरक्षा न की ?

इसका जवाब यह है कि प्रत्येक घरों में अलग- अलग चिराग़ मात्र उसी समय तक जलते हैं जब तक कि सूर्य उदय न हुआ हो। प्रारम्भिक काल में जबकि जातियों की सीमायें संकुचित तथा सीमित थीं। मानव जाति की भलाई इसी में थी कि उनके अलग-अलग चिराग़ हों परन्तु इस समय जबकि छापा खाने, रेल, तार, जहाज़ के अविष्कार ने पूरब तथा पश्चिम को मिला दिये हैं और जबकि धरती पर विश्व व्यापी भौतिक एकत्व के मज़बूत साधन उपलब्ध हो चुके हैं, अगर ईश्वर इन

समस्त ईशदूतों को जो अपनी-अपनी जाति एवं क़ौम के दूत थे और प्रारम्भिक काल के लिए थे, एतेहासिक जीवन देकर उनके हालात और प्रेम प्रभावों को स्थापित कर देता तो शायद मानवजाति का एक क़दम भी, क़ौमी और जातीय मतभेद से मानव-एकता की ओर न उठ सकता। इसलिए ईश्वरेच्छा का तक़ाज़ा यही है कि वह समस्त ईशदूत जो एक सीमित समय एवं काल के मार्गदर्शन के लिए आये थे उन्हें एतिहासिक महत्व न दे, उनके जीवन के दिनचर्या की तसवीरें कुछ समय तक इन्सानों के सामने रहीं और फिर अदृश्य हो गयी और कुछ का दुनिया में नाम बाक़ी है, कुछ का नाम भी बाक़ी नहीं है, कुछ की याद क़िस्सों, कहानियों तथा नाटकों में गुम हैं और कुछ के अस्तित्व के बारे में भी दुनिया को सन्देह है। अब इससे स्पष्ट हो जाता है कि जिन धर्म-प्रवर्तकों का जीवन इस स्तर तक इन्सान की दृष्टि से ओझल हो, वह न तो मानव-प्रेम का केन्द्र बिन्दु बन सकते हैं, और न मानव समाज में कोई उत्साह एवं कर्म की शक्ति पैदा कर सकते हैं, चूंकि उनके आमाल एवं कर्म हमारे सामने मौजूद नहीं हैं, इसलिये मानव-प्रकृति उनके मात्र कथनों एवं शब्दों से संतुष्ट नहीं हो सकती, चूंकि उनके जीवन का कोई पूर्ण रूपरेखा हमारे समस्त मौजूद नहीं है इसलिए विभिन्न मानव जातियाँ उनके जीवन में कोई रुचि नहीं ले सकतीं और इन परिस्थितियों में यदि उन्हें समस्त मानव जाति के लिये नमूना और आदर्श बना भी लिया जाये तो इससे दुनिया को कोई फ़ायदा हासिल नहीं होगा।

(पैग़म्बरे इस्लाम)

अब हज़रत मुहम्मद सल्ल० के हालात पर नज़र डालिये, आप 22 अप्रैल 571 ई० की सुबह में पैदा हुये और 2 हज़ार दो सौ तीस दिन और 6 घण्टे इस दुनिया में रहे, मुसलमानों का दावा है कि आज तक इस धरती पर कोई ऐसा इन्सान पैदा नही हुआ और ना ही भविष्य

में होगा, जिसके सच्चे तथा विस्तृत हालात हज़रत, मुहम्मद सल्ल० की तरह समस्त मानव जाति के समक्ष मौजूद हों, मुसलमानों का दावा दो बड़े तर्क पर आधारित है।

1. हज़रत मुहम्मद सल्ल० को अपने जीवन का महत्व और मूल्य मालूम था । आपने यह बात अपने अनुयाइयों के मन में यह बिठा दी थी कि आप समस्त मानव जाति के लिये ईश्वर के भेजे हुये नबी (दूत) हैं, क़ियामत (प्रलय) तक के लिये हैं और आपका प्रत्येक कर्म आगामी नस्लों के लिये आदर्श एवं नमूना है, इसी कारण आपने अपने समय के प्रत्येक मुसलमान को आदेश दिया था कि मेरे कर्म एवं कथन दूसरों तक पहुंचाओ चाहे एक वाक्य ही तुम्हें ज्ञात हो, इस निर्देश का परिणाम यह हुआ कि हर वह मुसलमान जिसने एक बार भी आपको देखा था आपके पवित्र जीवन का प्रचारक बन गया। अन्तिम हज में एक लाख मुसलमान पैग़म्बरे इस्लाम के साथ थे। उनमें से पूरे 13 हज़ार प्रतिष्ठित वह व्यक्ति हैं जिन्होंने पैग़म्बर इस्लाम से सम्बन्धित एक या अधिक वाक्य दूसरों के समक्ष व्यक्त किये हैं, इन तेरह हज़ार लोगों का जीवन-परिचय इतिहास की पुस्तकों में शब्दशः सुरक्षित हैं, इसलिये सुरक्षित हैं कि उन्होंने पैग़म्बरे इस्लाम से सम्बन्धित एक या अधिक वाक्य संसार के सामने व्यक्त किये हैं। इन तेरह हज़ार लोगों के चश्मदीद बयानों के अतिरिक्त उन मुसलमानों की संख्या जिन्होंने एक या दो साधनों या वास्तों से आपके पवित्र जीवन को प्रस्तुत करने में हिस्सा लिया है, 5 लाख हैं। इन पांच लाख लोगों की जीवनीयाँ प्रमाण एवं ईमानदारी के साथ (इस्माउर्रेजाल) की पुस्तकों में सुरक्षित है, और संसार प्रत्येक वाक्य से सम्बन्धित जो हम पैगम्बर इस्लाम के सम्बन्ध से व्यक्त कर रहे हैं मालूम कर सकती है, कि इस बात का वर्णनकर्ता कौन एवं कैसा व्यक्ति है? इसीलिए डा० स्प्रिंगर लिखते हैं –

''कोई क़ौम संसार में ऐसी नही गुज़री और न आज मौजूद है, जिसने मुसलमानों की तरह इस्माउर्रेजाल का विशाल एवं महत्वपूर्ण कला की खोज की हो जिसके बदौलत आज पांच लाख व्यक्तियों की स्थिति मालूम हो सकती है'' हज़रत मोहम्मद सल्ल० को अपने जीवन पर अत्याधिक विश्वास था। आपने अपने साथियों को आदेशित किया था कि जो लोग उपस्थित हैं वह आने वाले लोगों को मेरे जीवन और शिक्षाओं से अवगत करायें, पत्नियों को आदेश था कि जो कुछ अकेले में मुझसे देखो वह दूसरों को बताओ, आपके एक साथी अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० की यह स्थिति थी कि वह आप सल्ल० की ज़बान से जो कुछ सुनते थे लिख लेते थे । एक बार क़ुरैश ने उनको मना किया परन्तु जब मुहम्मद सल्ल० को पता चला तो आपने कहा, अब्दुल्लाह तुम लिख लिया करो, इस मुंह से जो कुछ निकलता है हक़ (सत्य) निकलता है। शमायले तिरमिज़ी एक प्राचीन ग्रन्थ है इसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल० की प्रतिदिन की आदतों एवं दिनचर्या का वर्णन विस्तार से किया गया है। लेखक ने इस पुस्तक में कुल 52 अध्याय रखे हैं, प्रत्येक अध्याय में सहाबा-ए-कराम (मुहम्मद सल्ल० के साथियों) के संस्मरण एकत्रित हैं, कुछ अध्यायों की सूची इस प्रकार है- ''मुहम्मद सल्ल० के बाल, कंघी, सफेद बाल, ख़िजाब, सुरमा, मोज़ा, जूती, अंगूठी, अमामा, पाजामा, चाल, बैठना-उठना, तकिया व बिस्तर लगाना, प्याला, क्या-क्या पीते थे, कैसे पीते थे, खुश्बू, हजामत, रात की बातें, मुस्कुराहट'' आदि ।

आप इससे अन्दाज़ा लगाइये कि पैग़म्बरे इस्लाम का जीवन किस सीमा तक बयान किया गया है। आप सल्ल० के साथियों की यह स्थिति थी कि वह मुहम्मद सल्ल० के सम्बन्ध से जो कुछ भी देखते थे दूसरों के

समक्ष व्यक्त कर देते थे, उन्हें बिल्कुल चिन्ता नहीं थी कि वह बात व्यक्त करने योग्य हैं भी या नहीं। उदाहरण स्वरूप पैगम्बर के एक प्रतिष्ठित सहाबी कहते हैं कि मुहम्मद सल्ल० के पास ''हलीफ़ नामक एक घोड़ा था वह हमारे बग़ीचे में चरा करता था'' दूसरे कहते है कि मुहम्मद सल्ल० के जूते में दो फीते थे, तीसरे साथी कहते है मैंने देखा मोहम्मद सल्ल० बायें ओर तकिया लगाये बैठे थे बस!

यह बातें देखने में कितनी ही अनावश्यक मालूम हों परन्तु यह उन्हीं का परिणाम था कि इतिहास के पन्नों पर मुहम्मद सल्ल० की जीवनी इस प्रकार स्वच्छ और स्पष्ट है कि इसके एक बाल पर भी अन्धकार की कोई झलक बाक़ी नहीं है।

प्रमाणित स्थिति

''मेरे हालात दूसरों तक पहुंचाओ'' के अतिरिक्त मुहम्मद सल्ल० ने दूसरा आदेश यह दिया था ''जो व्यक्ति जानबूझ कर कोई गलत बात मेरी ओर जोड़ेगा उसका ठिकाना नरक है।

इस आदेश का परिणाम यह हुआ कि रसूलुल्लाह सल्ल० के कथनो एवं कर्मों का वर्णन करने वाले संसार के समस्त इतिहासकारों में सर्वाधिक सच्चे, निष्ठावान तथा मोहतात बन गये, आम इतिहासकारों की स्थित यह है कि वह जब ऐसे महत्वपूर्ण एवं गम्भीर घटनाओं की भी व्याख्या करते हैं, जिनका प्रभाव किसी व्यक्ति या समुदाय की प्रतिष्ठा एवं सम्मान के साथ, प्रलय तक मौजूद रहने वाला हो तो वह अपने वक्तव्य के प्रमाण में कोई विश्वसनीय साक्ष्य प्रस्तुत नही करते और एक युग व्यतीत हो जाने पर उनकी मात्र प्रस्तुति ही एक प्रमाणित इतिहास बन जाता है।

परन्तु हदीस ज्ञाताओं की स्थिति यह है कि यदि उन्होंने मात्र यह बयान किया है कि रसूलुल्लाह की जूती में दो फीते थे, तो वह गवाहों का

पूरा सिलसिला भी लिख देते हैं और फिर प्रत्येक व्यक्ति के विषय में बताते हैं कि वह कौन था ? उसका चरित्र, स्मरण-शक्ति, आयु, शिक्षा, विश्वास एवं नैतिकता की स्थिति क्या थी? और मूल घटना से उसका सम्बंध क्या था? इस सिलसिले में यदि एक व्यक्ति के सम्बंध से उन्हें विश्वास नहीं होता है, तो वह समस्त बयानों को रद्द कर देते हैं। हदीस ज्ञाताओं की कुछ एहतियातें और सावधानियों को देखें-

1. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० जब किसी हदीस का वर्णन करते तो ''कभी यह नहीं कहते कि पैगम्बर इस्लाम ने यह कहा है, ''एक दिन यह वाक्य उनके मुंह से निकल गया, फिर क्या था, फ़ौरन घबरा गये, सर झुक गया, आँखों में आँसू भर आये, गले की नसें फूली हुई थीं, खड़े थे और कह रहे थे हजरत मुहम्मद (ईश्वर की कृपा हो उन पर) ने यूँ कहा है या यूँ इससे अधिक था कुछ कम या इसके समान''।
2. इस्लामी विद्वान इमाम वक़ी के पिता सरकारी खजान्ची थे, वह जब हज़रत मुहम्मद का कोई कथन बयान करते तो इमाम साहब जब तक दूसरों से इसकी पुष्टि न कर लेते, पिता के बयान पर विश्वास न करते।
3. एक बार अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने महा प्रलय के विषय में पैग़म्बरे इस्लाम का एक कथन प्रस्तुत किया। जब हदीस ख़त्म हो गयी, तो आप मुस्कुराने लगे, फिर सुनने वालों से कहा, तुम पूछते क्यों नहीं कि मैं क्यों हंसता हूँ? लोगों ने पूछ लिया, तो आप कहने लगे, इस मौक़े पर पैग़म्बरे इस्लाम भी इसी तरह मुस्कुराये थे।
4. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस रज़ि० मिस्र में थे। हज़रत जाबिर रज़ि० को मालूम हुआ कि उन्हें क़िसास (मृत्यु का बदला) के सम्बन्ध से रसूलुल्लाह सल्ल० की हदीस याद है। हज़रत जाबिर रज़ि० मदीना के बाज़ार में पहुंचे, एक ऊँट खरीदा और हदीस के

कुछ वाक्यों के लिये मदीना से मिस्र तक बराबर एक महीना यात्रा करके मिस्र पहुँच गये। हज़रत अब्दुल्लाह ने उनके आने का कारण पूछा, तो कहा मैं इसलिये मिस्र आया हूँ कि हम दोनों में से किसी की मौत से पहले, आपसे रसूलुल्लाह की वह हदीस सुन लूं।

कहां तक इस प्रकार की घटनाओं को वर्णन किया जाये संक्षेप में यह कि ''बल्लिगू अन्नी'' (मेरे हालात दूसरों तक पहुंचाओ) का नतीजा यह हुआ कि कोई दो शब्दों का वाक्य जो किसी समय भी रसूलुल्लाह रज़ि० की ज़बान से निकल गया, मुसलमानों ने उसे हवा की तरंगों में विलीन नहीं होने दिया और ''मेरी ओर से झूठी बाते प्रस्तुत करने वाला नरक का भागीदार है'' का प्रभाव यह पड़ा कि आपके सहाबा रज़ि० की ज़बान से पवित्र जीवनी के सम्बन्ध से जितने भी शब्द किताबों के पन्नों पर अंकित हैं, वह शब्द न थे बल्कि ज़िन्दगी की जीती-जागती और बोलती-चालती तस्वीर थी। जब यह प्रमाण और व्याख्या हम तक पहुंची, तो दुनिया भर के शोधकर्मी और इतिहासकार चारों ओर से उमंड आये और रिसालत रूपी चन्द्रमा के गिर्द तारों का झुरमुट लग गया, प्रत्येक भाषा में पैगम्बरे इस्लाम की जीवनी पर किताबें लिखी जाने लगीं। ''रिसाला अल मुकतबिस'' दमिश्क द्वारा संकलित सूची से मालूम होता है कि केवल योरोप की विभिन्न भाषाओं में हज़रत मुहम्मद की पवित्र जीवनी पर जितनी ज़्यादा किताबें लिखी गयीं, उनकी संख्या डेढ़ दो हज़ार से कम नहीं है, प्रोफेसर मारग्यूलेस जैसे कट्टर विरोधियों की यह स्थित है कि जब पैगम्र की जीवनी को देखते हैं तो सहसा पुकार उठते हैं:- ''मुहम्मद सल्ल० की जीवनी लिखने वालों का एक लम्बा सिलसिला है, जिसका समाप्त होना असम्भव है परन्तु इसमें स्थान पाना सम्मान के योग्य है'' जान डेविडपोर्ट के शब्द निम्न हैं-

''इसमें कुछ संदेह नहीं कि सभी लेखकों और विजेताओं में एक भी

ऐसा नहीं है जिसकी जीवनी मुहम्मद सल्ल० की जीवनी से अधिक विस्तृत और सच्ची हो। *(अपोलोजी फार मुहम्मद एण्ड दी कुरआन)*

बास्वर्थ स्मिथ ने मुहम्मद और मुहम्मदनिज़्म में ज़रतुश्त, कन्फूशियस, सोलन, बुकरात, मूसा अलैह०, ईसा अलैह० और गौतमबुद्ध के जीवन के धुन्धलेपन पर दुख तथा आश्चर्य प्रकट किया है और फिर लिखा है- ''लेकिन इस्लाम, इसमें हर चीज़ विशेष है, यहां धुन्धलापन और रहस्य नहीं है। हम इतिहास रखते हैं, कोई व्यक्ति न खुद धोखा खा सकता है न दूसरों को धोखा दे सकता है। यहां पूरे दिन की रोशनी है। जो हर एक चीज़ पर पड़ रही है और हर एक तक पड़ रही है''। (मुहम्मद और मुहम्मदनिज़्म पेज नं. 14–15)

यह संस्कृति की कथाओं की स्वीकृतियाँ हैं और उस व्यक्ति से सम्बन्धित हैं, जो अनपढ़ था और यह सब कुछ इसीलिए है ताकि दुनिया पैगम्बरे इस्लाम की ज़िन्दगी को देखे और फ़ायदा उठाये-

(दरूद व सलाम हो आप सल्ल0 पर)

इस्लाम से पूर्व

(पांचवी और छठी शताब्दी की दुनिया)

पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल० अप्रैल 571 ई0 में पैदा हुये थे। उस समय दुनिया में दो बहुत विशाल हुकूमतें थीं। ईरान में मजूसियों यानी अग्नि पूजकों की हुकूमत और रोम में ईसाई सल्तनत की। भारत में पुराणों का ज़माना था। अरब में असंगठित क़बीले बिखरे पड़े थे। हम इस अध्याय में उन चारों देशों का क्रमवार उल्लेख करेंगे ताकि मालूम हो सके कि जब हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने अपना कार्य प्रारम्भ किया तो उस समय विश्व की स्थिति क्या थी।

ईरान की स्थिति

इस्लाम के आगमन से पूर्व ईरान में अग्नि पूजकों की हुकूमत थी। सामान्यतः यह लोग तारों को पूजते थे। अमीरों और बादशाहों को सज़्दे करते थे और उनके भजन गाते थे । इस बात की अनुमति थी कि पिता अपनी पुत्री से और भाई सगी बहन से निकाह कर ले। ईरान का बादशाह नैरो गुरू द्वितीय ने स्वयं अपनी बेटी से विवाह कर लिया फिर उसे क़त्ल कर डाला। पैग़म्बरे इस्लाम से पहले क़वाद प्रथम ईरान का बादशाह था, जिसे क़ैद कर लिया गया। उसके शासनकाल में मुज़दक नामक एक अजीब व ग़रीब धार्मिक गुरू था। उसने अपने देशवासियों को खुल्लम खुल्ला यह शिक्षा दी कि औरत, माल व जायदाद पर किसी भी व्यक्ति का अधिकार नहीं होना चाहिए। सारे पुरूष और सारी महिलायें जिस प्रकार चाहें आज़ादी से ज़िन्दगी व्यतीत करें। ईरान में मानवता का अपमान और पतन की हद हो चुकी थी कि वहां के अमीरों और ग़रीबों ने मुज़दक के धर्म को इस प्रकार स्वीकार कर लिया जैसे कि वह बहुत समय से उसी धर्म और विश्वास के प्रतीक्षक और मोहताज थे। सिपाहियों और अधिकारियों की नैतिक स्थिति यह थी कि 611 ई० में जब ईरान ने बैतुल मुक़द्दस को जीत लिया तो एक दिन में ईसाइयों के सारे गिरजे जला दिये गये। तीन सौ साल के चढ़ावे और यादगारें लूट ली गयीं, और 90 हज़ार ईसाइयों को क़त्ल कर दिया गया।

रोम की स्थिति

प्रसिद्ध इतिहासकार गिब्बन लिखता है कि छठी शताब्दी के अन्त में रोमी हुकूमत अपने पतन की अन्तिम सीमा पर पहुंच चुकी थी। इस पतन के ये कारण थे, वर्षो के भयानक गृह युद्ध, आन्तरिक साज़िशें, धार्मिक लड़ाइयां, गोथ और विन्डाल क़ौमों के हमले, रोम और ईरान की

निरन्तर और लम्बी लड़ाइयां। जिस जाति और क़ौम में इतनी अधिक बर्बादियाँ एकत्रित हों उसकी ज़िन्दगी स्पष्ट है।

रूमी क़ौम, हुकूमत और धर्म के नैतिक पतन के विषय में केवल एक घटना लिख देना ही पर्याप्त होगा।

पादरियों की मक्कारी और अय्याशी का हाल दुनिया को मालूम है यह वह औरत है जिसने कुस्तुनतुनिया में एलान करके ज़ानिया (व्यभिचारिणी) की उपाधि हासिल की थी। रोमी सम्राट की नैतिकता इसी से स्पष्ट है कि उसी दुराचारी औरत को अपने विवाह के लिये चुना था। और जब वह औरत रानी बन गयी तो हुकूमत के सभी फतवा देने वाले धार्मिक पादरियों, जरनलों और मातहत बादशाहों ने खामोशी के साथ उसे अपना लीडर और मालिक स्वीकार कर लिया।

आप उस ज़माने की धार्मिक स्थिति का कुछ घटनाओं से अन्दाज़ा लगा सकेगें। 1514 ई० में दो ईसाई समुदायों में धार्मिक युद्ध हुये, जिसमें 65 हज़ार ईसाई देश से निकाल दिये गये। असकफ़ महान सैन्ट सिरल ने यहूदियों पर आक्रमण कर दिया। परिणाम यह हुआ कि सारे यहूदी जिला बदर कर दिये गये और उनको सारे पूजा स्थलों को एक-एक करके ज़मीन के बराबर कर दी गईं।

असकफ़ महान की प्रेमिका हिलेशमा स्कूल से आ रही थी। विरोधी गुट के पादरियों ने उसे गाड़ी से उतार कर नंगा कर दिया और उसी स्थिति में घसीटते हुये गिर्जे के अन्दर ले गये। पादरी पीटर ने उसे भाले से हमला कर क़त्ल कर दिया। क़त्ल के बाद उसका मांस हड्डियों से अलग कर दिया गया और लाश के टुकड़े-टुकड़े करके आग के हवाले कर दिया। (गिब्बन जिल्द 3 पेज 328)

पश्चिमी चर्च में डमीस और आरेसिनस के बीच बिशप का चुनाव हुआ। क़त्ल तक नौबत आ पहुंची और सिसीनेनिस के गिर्जे से एक दिन

में 137 लाशें बरामद हुईं। जार्ज सेल 'क़ुरआन के अंग्रेज़ी अनुवाद में लिखता है कि जैस्टेनिन का विश्वास था कि हमारे धर्म को न मानने वालों को जान से मार देना कोई अपराध नहीं हैं। ड्रेपर लिखता है कि उस ज़माने में एक मर्यमी फ़िरका पैदा हुआ। उन्होंने हज़रत मर्यम को ''ख़ुदा की माँ'' की उपाधि दिया था और दावा किया था कि ख़ुदा की तसलीस (त्रिमूर्ति) में मर्यम अलै० भी सम्मिलित हैं। यह तो पादरियों की स्थिति थी, अब रहे राहिब (सन्यासी) तो यह क़सम खाते थे कि सारी उम्र स्नान नहीं करेंगे। किसी ने अपने आप को दलदल में डाल दिया था। कोई अपने आपको जंज़ीरों में जकड़े रखता था। कोई छांव को अपने ऊपर हराम एवं वर्जित समझता था, कोई ज़िन्दगी भर के लिये कोठरी में क़ैद हो लिया था। यह चीज़े उनकी धर्म परायणता एवं धार्मिकता का पैमाना थीं वह उस जीवन पर बहुत गर्व करते थे।

जब बादशाहों और धार्मिक गुरूओं की यह स्थिति हो तो आम जनता की जो कुछ दशा होगी वह बिल्कुल स्पष्ट है।

भारत का पाँचवा दौर

इस्लाम के आगमन के समय भारत में पुराणों का ज़माना था, वेद, रामायण, महाभारत तथा भारतीय धर्मगुरू, गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी के अध्यात्मिक एवं बौद्धिक काल का अन्त हो चुका था।

प्रसिद्ध इतिहासकार अलबेरूनी ने कई वर्ष यहां रहकर अन्तिम दौर के भारत की सामाजिक स्थिति देखी है, वह अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'किताबुल हिन्द'' में लिखता है कि ''हिन्दू लोग अपने शरीर से कोई बाल नहीं काटते हैं, गर्मी के कारण नंगे घूमा करते हैं, वह अपने नाखून नहीं काटते, अपने आलस्य पर गर्व करते और नाखूनों से सर खुजलाते और जुएं टटोलते रहते हैं। गोबर के चौके में एक-एक करके खाते हैं,

खाली पेट शराब पीते हैं, त्यौहारों के अवसर पर अपने शरीर पर गाय का गोबर मलते हैं, उसका पेशाब भी पी जाते हैं, पुरुष स्त्रियों की तरह बालियां, छल्ले और चूड़ियां पहनते हैं। पाजामों की जगह चादर बांधते हैं और जो लोग कम कपड़े पहनना चाहें, वह मात्र दो उंगली चौड़ा चीथड़ा लेकर रानों के दरम्यान से निकाल लेते और उसके दोनों सिरे रस्सी के कमर में अटका लेते हैं। भारत में लाखो साधु ऐसे हैं जो मर्द और औरत सबसे सामने बिलकुल नंग-धडंग चलते फिरते हैं''

विस्तृत जानकारी के लिये ''श्री आर०सी० दत्त की पुस्तक'' ''प्राचीन भारत'' का अध्ययन करना चाहिए। आपके आलेखों का सार यह है कि वेद के तैंतीस देवताओं की तादाद 33 करोड़ तक पहुंच चुकी थी। मन्दिरों के महन्तों का काम था, नैतिकता और धर्म के नाम पर लूटना। जात-पात तथा भेदभाव आम था। औरतों की हैसीयत दासी से अधिक न थी। मन्दिरों के पुजारी औरतें और देवदासियों की स्थिति बखान करने योग्य न थी। औरतें जुऐं में हारी जातीं, एक-एक औरत के कई-कई पति होते थे। विधवाओं को इतना अधिक कष्ट में रखा जाता कि वह पति के साथ सती हो जाने को उचित समझती थी। राजाओं के महलों में मदिरा-पान आम थी और सड़कों पर दुष्चरित्रों की भीड़ में मौजूद रहती थी।

शकतक मत वालों की स्थिति अत्याधिक दैयनीय थी। उन्होंने अनुमति दे रखी थी कि कई पुरूष मिलकर एक स्त्री से विवाह कर सकते हैं। पुरोहित अपने भक्तों की पत्नियों में साझीदार समझे जाते थे। नई दुल्हनें विवाह के प्रथम सप्ताह धार्मिक गुरूओं के यहां व्यतीत करती थीं। वर्ष की कुछ विशेष रातें शराब और बिलासिता के लिये अर्पण कर दी जातीं । शकतक मत वालों का विश्वास था कि शकतक भजन जो इस अवसर पर गाये जाते हैं पाप को पुण्य में बदल देते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 11 पेज नं. 378, 379 (सेवक स्टीम प्रेस, लाहौर) में लिखा है कि भारत के कुछ सम्प्रदाय की औरतें मर्द को और मर्द औरतों को नंगा करके उनकी पूजा करते थे।

भारत के प्राचीन निवासियों के साथ वैधानिक तथा धार्मिक रूप से जो व्यवहार किया जाता रहा है, उसकी मिसाल नहीं मिलती। ब्रह्मणों ने करोड़ों लोगों के बारे में यह निर्णय दे दिया था कि उनके छूने से इन्सान अपवित्र हो जाता है। उन्हें कुछ सड़कों पर क़दम रखने की अनुमति न थी। उन पर वेद का पढ़ना वर्जित था अगर वह वेद की आवाज को सुन लेते तो बहुत ही बेदर्दी से सीसा पिघला कर उनके कानों में डाल दिया जाता। उच्च जाति के पुरूष का किसी नीच दलित स्त्री से मुंह काला करना कोई अपराध न था। अगर कोई अछूत किसी ऊंची जाति वाले को छू लेता तो क़त्ल कर दिया जाता, अगर वह मारने के लिये हाथ उठाता तो अंग-अंग काट दिये जाते, गाली देता तो ज़बान काट दी जाती, अगर शिक्षा देने का दावा करता था तो आदेश था कि इसके मुँह में जलता हुआ तेल डाल दिया जाये। यह मानवता का अपमान और अत्याचार की चरम सीमा थी।

अरब की स्थिति

अरब की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। यहां मूर्ति पूजा का प्रचलन था, अरब के बहुदेववादियों का विश्वास था कि ईश्वर के बाल बच्चे भी हैं। वह फ़रिश्तों को ईश्वर की बेटियां कहते थे, जिन्नों को खुदा का रिश्तेदार तथा सम्बन्धी बताते थे और उनकी पूजा करते थे। उन्हें मूर्ति पूजा का इतना अधिक शौक था कि अगर पत्थर न मिलता तो मिट्टी का पुतला बनाकर उसे पूजने लगते। क़बीला-खज़ाअ का एक व्यक्ति अम्र बिन लुही बल्क़ा की यात्रा से एक मूर्ति ले आया था, उसकी देखा-देखी सारे लोग मूर्ति पूजक बन गये। खाना-ए-क़ाबा में 360 बुत

रखे हुये थे। हर क़बीले का बुत अलग था। कुछ लोग सितारों को भी पूजते थे। अरबों में जिन्नात के सम्बंध से भांति-भांति की कहानियां मशहूर थीं। काहिनों (भविष्य वक्ताओं) का दावा था कि हम भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं को बतला सकते हैं और इस कार्य के लिए हर एक के साथ एक जिन मौजूद रहता है। शायरों और कवियों के सम्बंध से उनका ख्याल था कि प्रत्येक शायर और कवि के साथ एक शैतान रहता है। सांप को मार नहीं सकते थे, उनका विश्वास था कि सांप को मारा जाये तो उसका जोड़ा अवश्य बदला लेता है।

अरब का आर्थिक स्रोत तलवार थी, वह मामूली-मामूली सी बात पर कट मरते थे, एक बार बादशाह हीरह की माता ने अम्र बिन कुलसुम की माता को एक थाली उठा लाने को कहा। बेटे को मां के इस अपमान पर इतना क्रोध आ गया कि उसने भरे दरबार में बादशाह का तलवार से सर उड़ा दिया। एक व्यक्ति ने घुड़दौड़ में अपने साथी के घोड़े को भड़का दिया। उस पर दोनों पक्षों के क़बीलों में पूरे चालीस वर्ष तक युद्ध चलता रहा। एक व्यक्ति ने बसूस क़बीले की ऊँटनी के थन ज़ख्मी कर दिये थे, इस पर बक्र और तग़लब के दो क़बीले सैंकड़ों साल तक लड़ते रहे। अरब में मदिरा-पान की कोई सीमा न थी। प्रत्येक अरब का घर एक स्थाई रूप से शराब-खाना था। जब किसी घर में दोस्त या साथी एकत्रित होते तो शराब का दौर चलता था, फिर सब लोग ऊँटों की शर्त लगाकर जुआ खेलते। इसी बीच घर का मालिक नशे में धुत होकर उठ जाता और ऊंटों को काट-काट कर मांस के ढेर लगा देता। फिर समारोह में शामिल लोग खाने की ओर ध्यान देते, मांस भूनते, कबाब बनाते और खाते, साथ ही दुराचारी औरतें गाना-बजाना शुरू कर देतीं। इस तरह के समारोहों में हर ओर नग्नता और अश्लीलता की आंधियां चलने लगतीं।

सूद-ब्याज का प्रचलन आम था। महाजन लोग कर्ज़दारों के बच्चों तक को रहन में रखवाते थे। निर्दयता की यह चरम सीमा थीं कि अरब लड़ाकू ज़िन्दा जानवरों को पेड़ के साथ बांध कर तीर चलाने का अभ्यास किया करते। लड़ाई में गर्भवती महिलाओं के पेट फाड़ देते, बच्चों को तीरों का निशाना बनाते, दुश्मन के हाथ-पांव काट कर ज़मीन पर डाल देते कि तड़प-तड़प कर मरें। औरतें शत्रुओं की लाशों का ख़ून पीतीं और कलेजा निकाल कर चबा जातीं। जंगी-कैदियों के छोटे-छोटे बच्चों की हत्या कर देते, बल्कि जलती आग में डाल कर राख बना देते। औरतें लाशों के अंग प्रत्यंग काट कर माला बनाती थीं। शत्रुओं की हत्या करके उनकी खोपड़ी में शराब पी जाती। शत्रुओं के अंगों को पेड़ों के तनों से बांध कर बीच से चीर दिया जाता। दुश्मन औरतों को घोड़ों की पूछों में बांध कर घोड़े दौड़ा दिये जाते और कंकरों पर रौंद-रौंद कर परखचे उड़ा दिये जाते।

ज़िना व्यभिचार का प्रचलन आम था। इश्कबाज़ी की शान में क़सीदे लिखे जाते और गर्व से पढ़े जाते । अरब के सर्वश्रेष्ठ कवि इमराऊल क़ैस ने अपनी फुफेरी बहन से दुष्कर्म की घटनाओं पर बड़े गर्व से एक क़सीदा लिखा था और यह कसीदा खाना-ए-काबा की दीवार पर लटकाया गया, बड़े-बड़े रईस लोग अपनी लौंडियों की देह-व्यापार की कमाई खाते थे, बहादुर व्यक्तियों के पास अपनी औरतें भेजते थे, ताकि दिलेर और बहादुर संतान पैदा हो। व्यभिचारी औरतों के यहां जब औलाद पैदा होती तो वह ज्योतिषियों की सहायता से अपने परिचितों के साथ बांध देंती कि यह तुम्हारा बच्चा है, एक औरत के जितने अधिक मर्दों के साथ सम्बंध होते, वह अपने को उतना ही अधिक श्रेष्ठ समझती थी। मुल्क में शर्म व हया का नाम तक न था। हज में हज़ारों और लाखों व्यक्ति एकत्र होते और पूरी तरह नंगे होकर काबे

का परिक्रमा करते, औरतें भी नंगी होतीं थी मर्द भी नंगे होते। अरब निवासी खुले मैदान में नंगे नहाते, समारोहों में बैठकर अपनी पत्नी की वैवाहिक जीवन की घटनायें खुल्लम-खुल्ला बयान करते, सौतेली माताओं पर कब्ज़ा करके पत्नी बना लेते। वैध वर्जित तथा हराम में कोई अन्तर न था, छिपकिली तक खा जाते, खून को दही की तरह जमा कर शक्कर के साथ खाते। मुर्दा जानवरों को खा जाना एक आम बात थी। निर्दयता की चरम सीमा है कि अगर मांस की आवश्यकता होती तो वह प्रायः जीवित जानवरों के अंगों को काट लेते थे। बहेरलाल यह थी ईरान, रोम, भारत और अरब की स्थिति जब हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने अपने कार्य का शुभारम्भ किया। आपने जलील और अपमानित, अत्याचारी तथा जाहिल इन्सानीयत के समक्ष जो जीवन का नमूना प्रस्तुत किया उसे अगले अध्याय में देखें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ आदर्श

''लकद काना लकुम फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वये हसना''

पिछले पृष्ठों में बताया जा चुका है कि पैग़म्बरे इस्लाम से पहले दुनिया की क्या हालत थी? अब हम बयान करेंगे कि आप सल्ल० ने समस्त मानवजाति के सामने जीवन का क्या नमूना प्रस्तुत किया है।

ख़ुदा से सम्बंध

सीरते रसूल सल्ल० का संदेश यह है कि इन्सान हर समय ख़ुदा को अपने सामने समझे और खुदा के लिए ज़िन्दगी गुज़ारे, आप सल्ल० का पावन व्यक्तित्व ऐसा ही स्वच्छ जीवन का पूर्ण नमूना था। आपके दिल व दिमाग़ हर समय ख़ुदा के जलाल (प्रताप) से ओत-प्रोत थे। आप उठते बैठते, चलते फिरते हर समय ख़ुदा की याद में लीन रहते। जब भी कोई काम शुरू करते अल्लाह का नाम (बिस्मिल्लाह) ज़रूर लेते। रात और दिन में आठ बार वुज़ू करके पवित्र शरीर और स्वच्छ

कपड़ों के साथ नमाज़ अदा करते। जब रात होती तो फिर ख़ुदा की हम्द व सना ईश वन्दना में खड़े हो जाते, सारी दुनिया थक कर सो जाती परन्तु आपका दिल और ज़बान ख़ुदा की याद से गाफिल न होता। अल्लाह के दरबार में इतनी देर खड़े रहते कि पांव पर सूजन आ जाती। इस तरह रात में लम्बे जागरण के बाद जब बिस्तर पर आते तो फिर क़ुरआन पाक की आयतें (सूक्तियाँ) पढ़ना शुरू कर देते और इस क़दर दिल की नर्मी और आद्रता से अल्लाह की पवित्र पुस्तक का पाठ करते कि सुनने वालों के दिल पिघल जाते। कभी रात में कब्रिस्तान को निकल जाते और ख़ुदा के डर से आंसू बहाते। ख़ुशी होती तो अल्लाह को पुकारते, मुसीबत आती तो ख़ुदा को याद करते, ज़ोर की हवा चलती तो ठिठक कर काबे की ओर चेहरा करके खड़े हो जाते और दुआ के लिये हाथ उठा देते। जब क़ुरआन करीम में ईश्वरी प्रकोप की आयतें अवतरित हुयीं तो अल्लाह तआला से इतना अधिक डरने लगे कि बुढ़ापा उतर आया और बाल सफेद हो गये। सहाबा-ए-कराम जब यह दिल दहलाने वाली स्थिति को देखते तो प्रश्न करते। या रसूलुल्लाह ! आप तो अल्लाह के पैगम्बर हैं फिर इतना ग़म क्यों करते हैं ? जवाब में इर्शाद होता है क्या मैं अल्लाह का शुक्र गुज़ार (कृतज्ञ) बन्दा न बनूं ?

जन सेवा

यदि आप सल्ल० के जीवन से ''ख़ुदा की याद'' को अलग कर दिया जाये तो बाक़ी जो कुछ बचता है वह इन्सानों की खिदमत है। आपके धर्म में खुदा से सम्बंध पैदा करने का दुनयवी उद्देश्य केवल यह है कि इन्सान खुदा की सृष्टि का सेवक बन जाये आपका कथन है ''सय्यदुल क़ौम खादिमुल क़ौम'' यानी क़ौम का सरदार वह है जो क़ौम का सेवक हो। एक दूसरे अवसर पर फ़रमाया -

''सारी सृष्टि खुदा का परिवार है। अल्लाह के समक्ष सबसे प्रिय इन्सान वह है जो उसकी सृष्टि के साथ अच्छा व्यवहार करे। हुजूर सल्ल०

का व्यक्तिगत जीवन देखिये। आप सल्ल० ग़रीबों और निर्धनों से बहुत प्रेम करते, दोस्त और दुश्मन सबके साथ खुश होकर मिलते, अपने सेवक के काम-काज में मदद करते, बाज़ार से अपनी और पड़ोसी औरतों की, जिनके पति मौजूद न होते, सामान खरीदते और खुद ही उठा लाते। हर छोटे और बड़े को सलाम करते, हर एक को उचित सलाह देते और परापेकार एवं भलाई के कामों पर उभारते, कोई अच्छा काम देखते तो उसी समय उसकी सहायता के लिये तैयार हो जाते, यात्री, पीड़ित, बेवा, अनाथ को हर समय पूछते और उन्हें सहारा देते, अपने और दूसरों की बीमारी का हाल मालूम करने के लिये उनके घर जाते, बीमार को तसल्ली देते और उसे किसी चीज़ की आवश्यकता होती तो उसका प्रबंध करते। बच्चों के पास से गुज़रते तो उन्हें पहले ''अस्सलाम अलैकुम'' कहते और फिर प्यार करते। बूढ़ों का सम्मान करते। हज़रत सिद्दीके अकबर, अपने बूढ़े और अन्धे बाप को बैयत (वचन बद्धता) के लिये लाये, तो आपने फ़रमाया आपने उन्हें क्यों तकलीफ़ दी? मैं खुद उनके पास चला जाता। मांगने वाले को कभी निराश न करते, यदि पास में कुछ पास न होता, तो कर्ज़ लेकर भी उसकी आवश्यकता को पूरी करते। जब किसी दोस्त का निधन हो जाता तो उसका माल उत्तराधिकारियों को दिलाते लेकिन यदि वह कर्ज़दार होता तो कर्ज़ा स्वयं अदा कर देते। किसी व्यक्ति ने आपको कैसा ही कष्ट दिया होता, जब वह व्यक्ति आपके क़रीब आ जाता तो शर्म से आंखें झुका लेते और माफ़ कर देते।

जन सेवा पर बहुत ज़ोर देते, कहते कि अपने सेवकों और गुलामों को समान अधिकार दो, उन्हें आज़ादी दिलाओ, अपनी लौडियों (सेविकाओं) से अच्छा व्यवहार करो। भूखों को खाना खिलाओ, अनाथ बच्चों के माल की सुरक्षा करो, कर्ज़दारों की सहायता करो ताकि उनके

बोझ हलके हो जायें। सदैव सदका जारिया (जिसका प्रतिफल मृत्यु के उपरान्त भी मिलता रहता है) की नसीहत करते, फलदार वृक्ष लगाओ, मस्जिदें बनवाओ, कुअें खुदवाओ और उन्हें सभी की आसानी के लिये वक्फ़ कर दो। बेज़बान जानवरों पर दया और हमदर्दी का आदेश देते। एक बार तेज़ हवा चली और एक व्यक्ति किसी कारण से उसे गालियां देने लगा। फ़रमाया गाली न दो। यह अपना कर्तव्य पूरा कर रही है। हज़रत अनस रज़ि० आप की सेवा में दस वर्ष रहे, कहते हैं कि इस बीच में जितने काम मैंने रसूलुल्लाह के किये, आपने उससे ज़्यादा मेरे काम पूरा किये है।

मदीना में एक पागल सी लोंडी थी, उसने आप सल्ल० को अपने काम के लिये रास्ते ही में पकड़ लिया। आप ने कहा, तू मदीना की जिस गली में चाहे बैठ जाये मैं वहीं आकर तेरा काम कर दूंगा, वह एक जगह बैठ गयी, आप वहा गये और उसका काम किया।

निर्धनों से इतनी सहानुभूति थी कि उनके दिल की बात समझ लेते थे। एक बार हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० भूख से बेहाल होकर रास्ते में बैठ गये। प्रथम खलीफा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० क़रीब से गुज़रे तो हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने उन्हें अपनी बेहाली याद दिलाने के लिए क़ुरआन की एक आयत का अर्थ पूछा। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने मतलब बताया और चले गये। फिर दूसरे खलीफा हज़रत उमर रज़ि० वहां से गुज़रे, उनके साथ भी यही वाक़िया हुआ और वह भी इसी तरह मतलब बता कर गुज़र गये। कुछ समय बाद आप सल्ल० वहां से गुज़रे, हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० ने उसी आयत का मतलब पूछा तो आप सल्ल० हँस पड़े और बोले, मेरे साथ चले आओ, घर ले जाकर दूध का प्याला था, वह दिया और फ़रमाया यह ले जाओ और सुफ़्फा के दूसरे गरीबों में बांट कर के पी लो।

आया और कहने लगा, मेरा थोड़ा सा काम रह गया है, मैं भूल जाऊंगा, पहले इस काम को कर दो, आप उसके साथ तुरन्त मस्जिद से बाहर चले गये और उसका काम करके फिर नमाज़ अदा की।

अपने हाथ से काम करना

आप हर प्रकार का कार्य अपने हाथ से करते। जानवरों को चारा डालते, बकरियां दूहते, कपड़े धोते और उनमें अपने हाथ से पेबन्द लगाते, जूते गांठ लेते, घर में झाड़ू दे लेते, गुलाम के साथ मिलकर काम कराते। जब मस्जिदे नबवी के निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ तो आप भी मजदूरों की पंक्ति में शामिल थे, मिट्टी खोदते थे, इतना भारी पत्थर उठाते थे, कि शरीर लचक जाता था। साथी निवेदन करते थे, हमारे मां-बाप कुर्बान हों, आप छोड़ दें हम खुद उठा ले जायेंगे, कहते बहुत अच्छा, लेकिन फिर थोड़ी देर बाद उतना ही भारी पत्थर उठाते और मज़दूरों में शामिल हो जाते। जब मज़दूर थकान मिटाने वाले शेअ्र पढ़ते, तो आप भी उनके साथ आवाज़ मिलाते। अहज़ाब की जंग में खन्दक की खुदाई शुरू होती, तो आप भी सब के साथ मिट्टी खोदने लगे, यहां तक कि शरीर मिट्टी से अट गया।

बात-चीत का नमूना

आप अधिकतर ख़ामोश रहते थे। और कभी अनावश्यक वार्ता न करते। जब वार्ता की ज़रूरत होती तो बहुत संक्षिप्त और अर्थपूर्ण बातें करते। व्याख्यान बहुत ही संक्षेप में देते कि सहाबा-ए-कराम रज़ि० एक-एक वाक्य उंगलियों पर गिन लेते। उपदेश और नसीहत कभी-कभी करते। कितना ही मामूली व्यक्ति आप को बुलाता, जवाब में सैदव लब्बैक (हाज़िर हुआ) कहते। छोटी-छोटी बातों पर अपने साथियों का शुक्रिया अदा करते। कोई अनुचित और कष्टदायक बातें ज़बान पर न

लाते। एक व्यक्ति ने पूछा, या रसूलुल्लाह मेरे लिये ज़्यादा खतरनाक चीज़ कौन सी है? आपने अपनी ज़बान पकड़ कर कहा ''यह'' आपका कथन है कि आदम का बेटा जब प्रातःकाल उठता है तो शरीर के सारे अंग ज़बान से निवेदन करते हैं कि खुदा से डरना, हम भी तुम्हारे साथ हैं, अगर तू सीधी रहेगी तो हम भी सीधे रहेंगे और अगर तू भटक जायेगी तो हम सब बर्बाद हो जायेंगे।

सामाजिक व्यवहार का नमूना :-

विश्व नायक हज़रत मुहम्मद सल्ल० की सामूहिक क्रिया-कलाप अत्यन्त पवित्र एवं प्रिय थीं। आप ग़रीबों में रहकर खुश होते, हर छोटे और बड़े को पहले सलाम करते, अगर कोई साथ चलता तो हाथ में हाथ दे देते। बच्चों के पास से गुज़रते तो उन्हें भी पहले सलाम करते, हाथ मिलाने के लिये पहले हाथ बढ़ाते, कोई चीज़ चाहे कितनी ही कम होती, उस खाने में साथियों को ज़रूर शामिल कर लेते। घोड़े पर सवार होते, तो दूसरों को पीछे बिठा लेते। चाहे कैसा ही मामूली व्यक्ति दावत देता, स्वीकार कर लेते। जो चीज़ सामने लाई जाती उसे चाव से खाते। सुबह के खाने में से शाम के लिये न उठा रखते थे। आपकी ज़बान और हाथ से किसी को तकलीफ न पहुंचती। कोई अप्रिय घटना घटित हो जाती तो सदैव नज़र अन्दाज़ कर देते और माफ़ कर देते। ईसाई और यहूदी भी अगर कुछ उपहार देते तो स्वीकार कर लेते और खुद भी उन्हें उपहार भेंट करते। अगर कोई व्यक्ति आकर क़रीब बैठ जाता तो नमाज़ संक्षिप्त कर देते। मेहमानों की सेवा करते और उन्हें अपनी चादर बिछा देते। किसी की बुराई और ऐब में सम्मिलित न होते। दोस्तों से कहते मुझसे किसी की शिकायत न करो, मैं चाहता हूँ कि जब दुनिया से जाऊँ तो मेरा दिल सभी की ओर से साफ हो। दोस्तों के अधिकारों का पूरा ख्याल रखते। आप एक व्यक्ति के साथ जंगल में निकले ज़मीन

खोदकर आपने दो दातूनें निकाली, एक सीधी थी, दूसरी टेढ़ी। आप सल्ल० ने टेंढी दातून खुद ली और सीधी वाली उस व्यक्ति को दी। उसने अर्ज़ किया, अच्छी दातून आप ले लें, फ़रमाया ''नहीं अगर कोई व्यक्ति थोड़े समय के लिए भी किसी के साथ रहे तो क़ियामत के दिन पूछा जायेगा कि दोस्ती का हक़ पूरा किया या नहीं''?

एक निर्धन व्यक्ति मस्जिदे नबवी में झांडू दिया करता था। वह बीमार हो गया तो कई बार आप उसको देखने के लिये उसके घर तशरीफ ले गये। उस व्यक्ति को आधी रात के क़रीब मौत आ गयी और उसे रात ही में दफ़न कर दिया गया। प्रातःकाल जब आप सल्ल० को सूचना मिली तो आप नाराज़ हुये, फिर उसकी कब्र पर गये और वहां नमाज़े जनाज़ा अदा की ।

व्यक्तिगत परिस्थियां (ग़रीबों के लिये नमूना)

पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल० ने ग़रीबों और निर्धनों के लिये सरलता एवं संतोष के जो पवित्र नमूने पेश किये हैं उसकी कुछ झलकियां प्रस्तुत हैं-

1— आप अधिकतर जौ की रोटी खाते। घर में छलनी न थी, इस लिये मुंह के फूकों से भूसी अलग की जाती। कभी-कभी कई-कई महीने घर में आग न जलती और आप घर वालों के साथ खजूर और पानी पर गुज़ारा करते। जब भूख ज़्यादा सताती तो आप सल्ल० की आदत यह थी कि पेट पर कपड़ा कस कर बांध लेते। एक बार एक सहाबी ने, जिसके पेट पर पत्थर बंधा हुआ था, आप से भूख की शिकायत की, इस पर आप सल्ल० ने अपना कुर्ता उठा दिया, आपके पेट पर दो पत्थर बंधे हुये थे। एक बार एक भूखे आदमी ने आपसे सवाल किया कि मैं बहुत भूखा हूँ। आपने अपने सभी घरों से पुछवाया परन्तु किसी घर में पानी के सिवा कोई चीज़ मौजूद न थी।

2– आप सदैव सादा और मोटा कपड़े पहनते थे। फ़रमाया करते, इन्सान का बेहतरीन लिबास उसकी परहेज़गारी (ईशभय) है। रात को चमड़े के बिस्तर पर जिसमें खजूर की छाल भरी होती आराम करते। कभी टाट को दुहरा करके बिछा लेते। एक रात आपकी पत्नी हज़रत आयशा रज़ि० ने टाट की चार तहें कर दीं, सुबह उठकर कहा, यह गद्देदार बिछौना मुझे शब बेदारी (रात्रि–जागरण) से वंचित रखता है। अब इसे पहले की तरह दोहरा करके बिछाया जाये।

3– आप सल्ल० जिस हुजरे (कोठरी) में रहते थे, उसकी दीवारें कच्ची थीं। खजूर के पत्तों और ऊंट के बालों की छत थी। एक बार हज़रत उमर रज़ि० आपके हुजरे में गये और देखा कि आप नंगी चारपाई पर लेटे हुये हैं। आप सल्ल० के बदन पर रस्सियों के निशान पड़े हुये है। एक कोने में कुछ सेर जौ रखे हैं और एक खूंटी पर एक जानवर की खाल लटक रही है। बस आप के घर की कुल सम्पत्ति यही थी। हज़रत उमर रज़ि० यह हाल देख कर रोने लगे। आप सल्ल० ने कहा ! उमर क्या तुम खुश नहीं हो कि कैसर व किसरा (रोम और फारस के बादशाह) इस अल्पकालिक जीवन में ऐश करें और हमें आख़िरत में स्थाई आराम और आनन्द प्राप्त हो।

4– आप सल्ल० की बेटी फ़ात्मा रज़ि० चक्की चलाती थीं ! कान्धे पर पानी की मशक उठाती थीं। एक बार आपने उनके गले में सोने की जंजीर देखी, फ़रमाया यह उचित नहीं कि मुहम्मद की बेटी के गले में आग का हार हो, नेक बेटी ने उसी वक़्त जंजीर बेंच दी और उसकी कीमत से एक ग़ुलाम आज़ाद कराया गया।

दो हिजरी में आपने अपनी इकलौती बेटी हज़रत फ़ात्मा रज़ि० का हज़रत अली रज़ि० से निकाह किया। उस समय हज़रत अली रज़ि० के पास मात्र तीन वस्तुये थीं, एक भेड़ की खाल, एक पुरानी यमन की

बनी हुई चादर और एक कवच, फ़रमाया यह पर्याप्त हैं। 480 दिरहम में कवच बेंच करके दुल्हन को संवारने की वस्तुयें और खुशबुयें आदि खरीदी गयीं, जब सय्यदे आलम ने अपनी इकलौती बेटी को रुख़सत किया तो आठ वस्तुयें दहेज में दीं, एक बान की चारपाई, एक चमड़े का गद्दा, एक सुराही, दो मिट्टी के घड़े, एक मशक और दो चक्कियां। निकाह के फ़ौरन बाद अलग मकान की आवश्यकता पड़ी। हारसा बिन नोमान रज़ि० के कई मकान थे जिनमें से कई मकान वह हुजूर को दे चुके थे। अब बेटी ने मांग की कि अब उन्हीं से सिफारिश कर दीजिये तो आप सल्ल० ने फ़रमाया बेटी ! कहां तक कहूँ ? अब मुझे शर्म आती है। हारसा रज़ि० को पता चला तो वह दौड़ते हुये आये और ज़बरदस्ती हज़रत फ़ात्मा को अपने एक मकान में लाकर बिठा दिया।

पारिवारिक जीवन :

पैग़म्बरे इस्लाम ने 25 वर्ष से 50 वर्ष की आयु तक एक पत्नी के साथ जीवन व्यतीत किया। जब हज़रत खदीजा रज़ि० का साढ़े 64 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया तो आपने ज़रूरत और मसलहत के लिये कई विवाह किये मगर सब में न्याय और इन्साफ़ को क़ाइम रखा। खैबर विजय के बाद हरेक पत्नी का प्रतिदिन का खर्च 20 वसक़ जौ और 80 वसक खजूर वार्षिक निर्धारित किया। दूध के लिये एक ऊँटनी अलग से दी जाती। आप अस्र के वक़्त प्रतिदिन हरेक पत्नी के यहां जाते और आवश्यक वस्तुओं का प्रबंध करते, फिर नमाज़ मगरिब के बाद सबसे थोड़ी देर की मुलाकात करते। रात के वक़्त हरेक घर में बारी-बारी से ठहरते। किसी सफ़र पर जाते तो क़ुराअन्दाज़ी (बहुत से लोगों में से एक का नाम निकालने का तरीक़ा) की जाती। जिसका नाम निकलता, आप उसे साथ ले जाते। यह हद है कि आप ने आख़िरी बीमारी में भी इसी तरीके की पूरी पाबन्दी फरमाई। आप चलने- फिरने के योग्य नहीं थे,

फिर भी आप दूसरों का सहारा लेते और क़दमों को ज़मीन पर घसीटते हुये प्रतिदिन नियमानुसार पत्नियों के यहां ठहरते। आखिर जब आपकी पत्नियों ने आपकी तकलीफ़ का एहसास करके खुद अनुमति दी तो आपने हज़रत आयशा के घर पर स्थायी रूप से क़ियाम किया और वहीं इस दुनिया से रुख़सत हो गये।

पैग़म्बरे इस्लाम का कथन है ''तुम में बेहतरीन इन्सान वह है जो अपने परिवार के लिये बेहतर हो और मैं अपने परिवार के लिए बेहतर हूँ।'' आप निर्देश देते कि जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से नाराज हो तो वह मात्र अपना बिस्तर अलग कर ले। न खुद घर से निकले और न बीवी को निकाले। अगर मारे बग़ैर चारा न हो तो मुंह पर न मारे।

निर्धनता और गरीबी के बावजूद आप अपने परिवार में अत्यन्त प्रेम एवं सम्मान का जीवन व्यतीत करते थे। हज़रत सफियां रज़ि० ऊँट पर सवार होतीं तो आप घुटना लगा देते और वह पैर रखकर आसानी से सवार हो जातीं। एक बार आप हज़रत सफ़िया रज़ि० के साथ ऊँट से गिर पड़े, हज़रत तलहा रज़ि० ने आपकी ओर देखते हुये फ़रमाया ''पहले औरत की ख़बर लो'' मस्जिदे नबवी में हबशियों को तलवार की कर्तब दिखाने की अनुमति दी गयी, तो आपने हज़रत आयशा रज़ि० को भी वह कर्तब दिखलायी। खुद पर्दा करके हुजरा (कोठरी) के सामने खड़े हो गये और जब तक हज़रत आयशा रज़ि० ने पूरी तरह से न देख लिया, खड़े रहे। हज़रत खदीजा रज़ि० के निधन के बाद अगर्चे आपने कई निकाह किये मगर आप उनकी मुहब्बत को किसी वक़्त भी नहीं भूले। जब उनका ज़िक्र आता तो आप के ऑखों में ऑसू आ जाते जब कभी बाहर से उपहार आते, तो आप उनकी सहेलियों को अवश्य कुछ हिस्सा भेज देते।

एक बार हज़रत आयशा रज़ि० और दूसरी पत्नियों में किसी बात पर अनबन हो गयी। हज़रत आयशा रज़ि० हक़ पर थीं, कुछ देर शान्त

रहीं परन्तु अन्त में जवाब देने लगीं। जब सुकून हो गया तो आप हज़रत आयशा रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गये और कहा, आयशा, तुम हक़ पर थीं, इसलिये जब तक तुम खामोश थीं, ख़ुदा के फरिश्ते हर बात में तुम्हारी ओर से जवाब देते थे लेकिन जब तुम ख़ुद बोलने लगीं तो वह तुम्हें छोड़ कर अलग हो गये।

क़ुरआन ने औरतों को बराबर के अधिकार दिये हैं। उन्हें जायदाद में हिस्सा दिया है वह अलग से कमाई कर सकती हैं और अपनी जायदाद बना सकती हैं। इन आदेशों के आधार पर पैगम्बरे इस्लाम की बड़ी कोशिशें यह थीं कि औरतें आदर और सम्मान के साथ स्वतंत्र जीवन व्यतीत करें। चुनांचे सम्मानित पत्नियों की ज़िन्दगियां समस्त पुरुषों एवं स्त्रियों के लिये समान अधिकारों का बेहतरीन नमूना है।

हज़रत खदीजा रज़ि० व्यापार करती थीं। हज़रत सौंदा रज़ि० ताइफ़ की खालें बनाती थीं और उनकी आमदनी अपने तौर पर नेक कामों में खर्च करती थीं। हज़रत ज़ैनब बहुत अच्छी कढ़ाईकार थीं। हज़रत सफ़िया रज़ि० का जब निधन हो गया तो अपने बाद एक लाख का तरका (मृत्यु उपरान्त छोड़ा हुआ धन) छोड़ा जिसमें से एक तिहाई अपने यहूदी भांजे के लिये वसीयत कर गयीं।

हज़रत आयशा और उम्मे सलमा रज़ि० लिखा हुआ पढ़ सकती थीं और हज़रत हफ़सा रज़ि० लिखना भी जानती थीं। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० आप सल्ल० की तर्ज़ पर क़ुरआन पढ़ा करती थीं। हज़रत आयशा रज़ि० बहुत बड़ी वक्ता थीं। हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० के सिवा सारे सहाबियों में एक व्यक्ति भी तकरीर (व्याख्यान) देने में हज़रत आयशा के बराबर न था। हज़रत अम्र बिन ज़ुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने क़ुरआन, फराइज़, हलाल व हराम, शायरी, चिकित्सा शास्त्र, अरब का इतिहास और इल्मेनसब (वंश जानने

वाला ज्ञान) में कोई व्यक्ति आयशा से बढ़कर नहीं देखा। आपकी पत्नियों का विशेष कार्य यह था कि वह औरतों को दीन की ज़रूरी बातें सिखायें। चुनांचे दीन की शिक्षाओं का बहुत बड़ा हिस्सा, आपकी पत्नियों ही से वर्णित है। हदीस की किताबों में हज़रत हफ़सा रज़ि० से 60 हज़रत उम्मे सलमा से 378 और हज़रत आयशा रज़ि० से 2210 हदीसें वर्णित हैं और उनमें अधिकतर हदीसें बहुत बड़े मर्तबे की हैं।

आपकी सम्मानित पत्नियां अपने सारे कार्य अपने हाथ से करती थीं। आपकी बेटी फात्मा रज़ि० चक्की पीसती थीं, कान्धे पर पानी की मशक उठाती थीं। आप सल्ल० की तरफ से सारी बीवियों को जो सामान दिया गया था, उसमें तीन चीज़े ज़रूर शामिल थीं, चक्की, घड़ा, चमड़े का गद्दा।

इस्लाम के प्रसार और प्रचार के अलावा पत्नियों द्वारा इस्लाम की हिफ़ाज़त और मिल्लत के संगठन में बहुत बड़ा हाथ था। उहद की लड़ाई में हज़रत आयशा और उम्मे सलमा रज़ि० घायलों को पानी पिलाती थीं। यरमूक की लड़ाई में हज़रत जवेरिया रज़ि० ने बड़ी बहादुरी से लड़ीं। 35 हिजरी मे जब बाग़ी जमाअत ने हज़रत उस्मान रज़ि० का घिराव किया तो हज़रत सफिया रज़ि० ने उन्हें बहुत मदद की। फिर उसी वर्ष जब इस्लामी शासन- व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी तो हज़रत आयशा रज़ि० इस्लाम की सुरक्षा के लिये मैदान में निकल आईं और इस्लाह (सुधार) का झण्डा बुलन्द कर दिया। हज़रत आयशा रज़ि० की दानशीलता का यह हाल था कि उन्होंने अकेले अपनी ज़ात से 67 गुलाम खरीदे और उन्हें आज़ाद कर दिया। एक बार अमीर माविया रज़ि० ने एक लाख दिरहम भेजे, मगर आप सल्ल० ने शाम से पहले सारा का सारा रुपया ग़रीबो में बांट दिये। सूरज डूबने के वक्त जब रोज़ा खोलने का वक़्त आया तो लौंडी ने अर्ज़ किया, घर में रोज़ा

खोलने के लिये कोई चीज़ मौजूद नहीं है, कहा तो उस वक़्त मुझे क्यों न याद दिलाया –

उरवा बिन ज़ुबैर रज़ि० फरमाते हैं कि हज़रत आयशा रज़ि० ने एक दिन में 70 हज़ार दिरहम ख़ैरात किये । आप उस वक़्त एक पेबन्द लगा कुर्ता पहने थीं किसी व्यक्ति ने अर्ज़ किया, आप अपने लिये कुर्ता भी बनवा लें मगर आपने थोड़ी भी परवाह न की और आख़िरी दिरहम तक गरीबों ही को ख़ैरात करती चली गयीं।

कृपाशीलता और दानशीलता :–

मुसलमानों पर ज़कात, माल का चालीसवां हिस्सा अनिवार्य था, लेकिन पैग़म्बरे इस्लाम ने अपना सब कुछ ख़ुदा के रास्ते में लुटा दिया था। यह आम आदेश था कि जो मुसलमान मर जाये, उसका कर्ज़ मैं अदा कर दूंगा, अगर उसने तरका छोड़ा हो तो वह उसके वारिसों (उत्तराधिकारियों) में वितरित कर दिया जाये।

एक बार बहरैन से ख़िराज (भूमिकर) का माल आया और मस्जिद के सहन में माल व दौलत का ढेर लग गया। हुज़ूर सल्ल० सुबह की नमाज़ लिये आये। सहाबा रज़ि० फ़रमाते हैं कि आपने उस ढ़ेर की ओर नज़र उठा कर भी नहीं देखा। नमाज़ अदा करके उस ढ़ेर के पास बैठे और बांटना शुरू किया। थोड़ी देर में सब बांट कर उठ खड़े हुये।

एक बार फ़िदक (स्थान का नाम) से ग़ल्ला के चार ऊँट आये, चूंकि लेने वाला कोई बाक़ी न बचा। इसलिये वह गल्ला शाम तक बंट न पाया। जब हुज़ूर सल्ल० को ख़बर मिली तो आपने कहा, जब तक यह दुनिया का माल बाक़ी है, मैं घर नहीं जा सकता। चुनांचे रात मस्जिद में व्यतीत की। सुबह के वक़्त बिलाल रज़ि० ने ख़बर दी हुज़ूर ! आप का घर साफ़ हो गया है, आपने खुदा का शुक्र अदा किया और घर चले गये।

एक बार नमाज़े अस्र के तुरन्त बाद आप सल्ल० हुजरे चले गये।

आपके साथियों को बहुत आश्चर्य हुआ, वापस आकर बताया, घर में यह सोने का टुकड़ा पड़ा रह गया था। रात होने से पहले उसका फैसला करना ज़रूरी था।

आप मौत के बिस्तर पर लेटे हुये हैं कि ख्याल आ गया कि घर में कुछ अशरफियां पड़ी हैं। हज़रत आयशा से कहा, उन्हें ख़ैरात कर दो, यह उचित नहीं है कि मुहम्मद अपने खुदा के दरबार में जाये और उसके घर में अशरफियां पड़ी हो''

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की दानशीलता आश्चर्य में डाल देती है। अपनी स्थिति कुछ भी होती, आप मांगने वाले को कभी उदास न करते थे। घर में एक आटे की टोकरी थी, मांगने वाला आ गया आपने पूरी टोकरी उसके हवाले कर दिया और घर वालों ने रात भूंखे रह कर व्यतीत की। एक मांगने वाला आया, फ़रमाया इस वक़्त मेरे पास कुछ नही है, तुम मेरे नाम पर कर्ज़ ले लो मैं अदा कर दूंगा, एक बार एक सहाबी ने चादर भेंट की, आपको ज़रूरत थी, इसलिये आपने स्वीकार कर लिया, क़रीब के एक व्यक्ति ने चादर की तारीफ़ की, हुजूर सल्ल० ने उसी वक़्त चादर उतार दी और उसके हवाले कर दी। आप एक दिन अपनी बकरियों के रेवड़ में जो दूर तक फैला हुआ था खड़े थे, एक ग़रीब आदमी ने सवाल कर लिया, हुजूर सल्ल० ने सारे रेवड़ उसके हवाले कर दिये और आप अलग हो गये।

सच्चाई और सुदृढ़ता :-

हज़रत मुहम्मद सल्ल० के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आप पहले ही दिन एक सच्चाई पर खड़े हुये और अन्त तक खड़े रहे। जब ज़िन्दगी रफ़्तार बदलती, सारी दुनिया अपनी जगह से हिल जाती, मगर आप के जीवन पर लेश मात्र भी प्रभाव न पड़ता।

काफ़िरों ने आपके क़त्ल की साजिश की और सारे कबीलों के चुने

हुये लोगों ने नंगी तलवारों के साथ आपके घर का घेराव कर लिया। आप चुपचाप उन शत्रुओं के पास से गुज़र गये और सिद्दीक़े अकबर रज़ि० को साथ लेकर सौर नामक गुफा में जा बैठे। शत्रु भी वहीं गुफा के मुंह पर आ खड़े हो गये। अब सिर्फ़ एक नज़र पड़ने की देर थी, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० यह हाल देखकर बेहाल और बेचैन हो गये, मगर पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल० पर इसका ज़रा सा भी असर न पड़ा- फ़रमाया-''सिद्दीक़ तुम क्यों डरते हो खुदा हमारे साथ है''।

आप इस्लामी फौज से दूर, अकेले एक पेड़ के नीचे सोये हुये थे कि यकायक वहां एक दुश्मन आ पहुंचा और तलवार तान कर सर के पास खड़ा हो गया। ठीक उसी वक़्त आपने आंख खोली और सर पर तलवार को देखा। दुश्मन ने आवाज़ दी ''अब तुम्हे कौन बचा सकता है, इस से ज़्यादा नाजुक वक़्त और क्या हो सकता था मगर आप सल्ल० पर ज़रा सा भी फ़र्क़ न पड़ा। आप सल्ल० ने एक शब्द में दुश्मन को जवाब दिया ''अल्लाह'' उसी वक़्त उसके हाथ से तलवार गिर पड़ी। जब वही तलवार आपने उठाई तो दुश्मन ने माफ़ी के लिये दोहाई मांगी, पैगम्बरे इस्लाम सल्ल० का दिल अब भी अपनी जगह पर था। फरमाया, माफ़ किया।

हुनैन की जंग में दस हज़ार फौज आपके साथ थी। दुश्मन ने एक सकरे रास्ते में बैठकर ऐसी अंधाधुंध तीरों की वर्षा की कि सारी इस्लामी फौज घबराकर भाग खड़ी हुई और एक व्यक्ति भी आपके साथ बाक़ी न रहा। आप इस नाजुक तरीन वक़्त में घोड़े से उतर आये, ज़मीन पर खड़े हो गये और इर्शाद फ़रमाया- ''मैं झूठा नबी नहीं हूँ, मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ''

हज़रत अब्बास रज़ि० ने आप को इस हाल में खड़े देखा तो मुसलमानों को आवाज़ दी। अब कुछ मुसलमान वापस पलटे और थोड़े ही समय में मैदान साफ हो गया।

क़ुरैश के सरदारों ने अरब की बेहतरीन औरतें, सोना-चांदी, और सिंहासन आपकी सेवा में पेश किये कि आप हमारे बुतों को बुरा न कहें, मगर आपने साफ़ इन्कार कर दिया। कुछ दिनों के बाद आपके चचा अबू तालिब के ज़रीये से आपको मौत की धमकी दी गयी मगर आप अब भी प्रभावित न हुये और फ़रमाया, ख़ुदा की कसम ! अगर यह लोग मेरे एक हाथ पर सूरज और दूसरे हाथ पर चांद लाकर रख दें, तब भी मैं अपने फर्ज़ (कर्तव्य) से पीछे न हटूंगा। ख़ुदा इस काम को पूरा करेगा या मैं खुद क़ुर्बान हो जाऊंगा।

एक रात यहूदियों और मुनाफ़िकों (कपटाचारियों) के डर से आप के दरवाज़े पर पहरे खड़े थे, इसी दरम्यान यह आयत उतरी ''अल्लाह लोगों से तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा'' आपने उसी वक़्त ख़ेमे से सर निकाल कर इर्शाद फ़रमाया, वापस चले जाओ, मेरी सुरक्षा का बेहतरीन प्रबन्ध हो गया है।

न्याय और समानता :-

पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल० एक यहूदी के कर्ज़दार थे। उसने निश्चित समय से तीन दिन पहले कर्ज़ का तकाज़ा किया, आप सल्ल० की चादर छीन ली, कपड़े खींचे और अपशब्द कहे। उस समय हज़रत उमर रज़ि० आप सल्ल० के पास थे। वह यहूदी पर नाराज़ होने लगे तो आप सल्ल० ने फ़रमाया ''उमर यह तरीक़ा सही नहीं है'' तुम्हें चाहिये था कि मुझे अदायगी की और साहूकार को नर्मी की नसीहत करते, फिर आपने हुक्म दिया कि कर्ज़ा अदा किया जाये और उमर फारूक रज़ि० की नाराज़गी के बदले अस्ल कर्ज़ा से डेढमन ज़्यादा गल्ला दिया जाये।

जब क़ुरैश के सरदारों ने आपके क़त्ल की क़रारदार (प्रस्ताव) मन्ज़ूर कर ली और सारे क़बीलो की संयुक्त तलवारों ने आपके घर का घिराव कर लिया तो आप सिद्दीक़े अकबर रज़ि० के घर आये। और

हिजरत (स्वदेश-त्याग) का संदेश सुनाया। हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने दो ऊँटनियां पेश करके निवेदन किया, आप एक पर सवार हों, अगर्चे यह वक़्त बेहद नाज़ुक था मगर आप सल्ल० ने उस वक़्त भी सिद्दीक़ रज़ि० से पहले ऊँटनी की कीमत तय की और फिर सवार हुये।

एक रात हज़रत सफ़िया रज़ि० के साथ मस्जिद से निकल रहे थे कि पास से दो अन्सारी गुज़रे। उन्होंने हुजूर को देखा तो क़दम तेज़ कर दिये। हुजूर सल्ल० ने फरमाया यहीं खड़े हो जाओ, यह देखो, मेरे साथ मेरी बीवी सफ़िया रज़ि० खड़ी हैं। उन्होंने कहा, पवित्र है खुदा की ज़ात या रसूलुल्लाह आप क्या फ़रमाते हैं, आपने फ़रमाया, नहीं शैतान, इन्सान की रग-रग में पहुंच जाता है, मुझे अंदेशा हुआ कि वह तुम्हें बहका न दे''।

फात्मा नाम की एक औरत ने चोरी की। लोगों ने उसामा रज़ि० की सिफारिश कराई, फ़रमाया- उसामा! क्या तुम अल्लाह की सज़ाओं में सिफारिश करते हो, सुनों अगर मेरी बेटी फ़ात्मा भी चोरी करती तो मैं उसे अवश्य सज़ा देता। सवाद बिन उमर ने एक रोज़ रंगीन कपड़े पहन रखे थे, आपने छड़ी से उसके पेट को कोंच दिया। सवाद ने कहा, मैं इसका बदला लूंगा। आप सल्ल० ने उसी वक़्त पेट से कपड़ा उठा दिया कि मैं हाज़िर हूँ, बदले के लिये। हुजूर सल्ल० के जूते का तल्ला टूट गया। एक सहाबी ठीक करने लगे, आपने फ़रमाया यह मुझे पसन्द नहीं। एक सफ़र में सहाबा ने खाना पकाने का इन्तिज़ाम किया, जब काम सब को बांट दिया तो आप लकड़ियां चुनने के लिये जंगल की तरफ चल दिये। सहाबा ने रोका तो आपने फ़रमाया मैं अपने को तुम से श्रेष्ठ नहीं कर सकता। जंगे बद्र में आप के चचा अब्बास गिरफ्तार होकर आये। सहाबा ने आपकी रिश्तेदारी का ख्याल करके निवेदन किया कि हमें अब्बास का फ़िदिया (मुक्ति-धन) माफ़ करने की अनुमति दी जाये। फ़रमाया, एक पैसा भी माफ़ न करो। रात के वक़्त सब कैदियों

की बाहें बांध दी गयीं, तो अब्बास दर्द से इस तरह कराह रहे थे कि हुज़ूर सल्ल० का दिल बेचैन हो गया। सहाबा ने आप की तकलीफ का एहसास करके अब्बास की रस्सियां ढीली कर दीं, जब आपको मालूम हुआ तो फ़रमाया, यह मुनासिब नहीं है, सब की रस्सियां ढीली कर दो या अब्बास की भी रस्सियां सख्त करो।

आप माफ़ करने के लिये हर समय तैयार रहते थे सुराक़ा बिन जअशम ने आप पर तीन बार तलवार से हमला किया मगर मक्का विजय के दिन आपने उससे कुछ भी पूछ-गच्छ न की, हिबार ने आप सल्ल० की बेटी को बर्छी से घायल किया था, तो फ़रमाया, माफ़ कर दिया। वहशी ने आपके चचा हज़रत हमज़ा को क़त्ल किया था। वह माफ़ी के लिये दरबार में हाज़िर हुआ तो हुज़ूर ने शर्म से अपनी ऑखे नीची कर लीं। जंगे उहद में आप के दांत टूट गये, चेहरा और माथे पर ज़ख्म आ गये, गुफा में गिर गये। कुछ सहाबा ने बद्दुआ (श्राप) के लिये निवेदन किया तो आपने फ़रमाया "ऐ खुदा मेरी क़ौम को हिदायत दे, वह जानती नहीं है"।

अन्तिम शब्द :-

यह है कि रसूलुल्लाह सल्ल० के आचरण एवं कर्म की एक झलक। मुसलमानों, ग़ैर-मुस्लिमों, सभी के लिए मुक्ति और सफलता का रास्ता यही है कि हम उनके पवित्र जीवन एवं कर्म का अनुकरण करें।